The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 1 | January 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

# लोक भाषा छत्तीसगढ़ी व हिंदी में सहजीवी सम्बंध

**जीतेंद्र कुमार वर्मा**

बाल्को, कोरबा(छग), ना.क्र.-SRUAD3528, शोधार्थी:-श्री रावतपुरा सरकार विवि रायपुर(छग)

**DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18648075**

भारतीय भाषा के अंतर्गत आने वाली पूर्वी हिंदी की एक समर्थ भाषा छत्तीसगढ़ी अपनी स्थानीय संस्कृति, परंपराओं और रीति-रिवाजों की सजीव झांकी है। यह भाषा न केवल जनजीवन की सहजता और आत्मीयता को दर्शाती है, बल्कि लोक साहित्य, लोकगीतों, लोककथाओं, नृत्य और कला के माध्यम से समाज की सामूहिक चेतना को भी स्वर देती है। हिंदी और छत्तीसगढ़ी का संबंध अत्यंत निकट है। यद्यपि छत्तीसगढ़ी में अपनी विशिष्ट शब्दावली, ध्वयनात्मक रंग और आंचलिकता की अलग पहचान है, फिर भी वह हिंदी को और अधिक जीवंत, बहुरंगी और संवेदनशील बनाती है। जिस प्रकार हिंदी साहित्य को छत्तीसगढ़ी लोककथाओं, गीतों और कहावतों का समावेश उसे गहराई और विविधता प्रदान करता है, उसी प्रकार हिंदी छत्तीसगढ़ी को सुदृढ़ता व सम्पन्नता प्रदान करता है। यदि हिंदी को राष्ट्रीय अभिव्यक्ति का स्वरूप माना जाए, तो छत्तीसगढ़ी उसकी आत्मीयता और लोकधारा का प्रवाह है, आंचलिकता का स्वर है। दोनों भाषाओं में इतनी गहन संबद्धता है, कि एक के बिना दूसरी अधूरी सी प्रतीत होती है। हिंदी और छत्तीसगढ़ी का यह संबंध भारतीय भाषाई परिवार की उस विशेषता को भी उजागर करता है, जहाँ विविधता के बीच एकता और परस्पर सहयोग का भाव विद्यमान रहता है। छत्तीसगढ़ी साहित्य और हिंदी साहित्य का संबंध केवल भाषाई स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक धरातल पर भी गहराई से जुड़ा हुआ है। हिंदी ने छत्तीसगढ़ी को एक व्यापक मंच प्रदान किया है, जिससे वह राष्ट्रीय साहित्यिक परंपरा का हिस्सा बन सकी है। वहीं छत्तीसगढ़ी ने हिंदी को लोकजीवन की आत्मा, सहजता और सांस्कृतिक गहराई का स्पर्श दिया है।

भारत के हिंदी भाषी प्रदेशों में छत्तीसगढ़ का भी महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ के लोग हिंदी को पूरी तरह पढ़ते, लिखते और समझते हैं। हिंदी उनके शैक्षिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग है। छत्तीसगढ़ के विद्यार्थी, कवि, लेखक, कलाकार, चिंतक और प्रचारक सभी हिंदी से गहराई से जुड़े हुए हैं और इसके विकास के लिए निरंतर प्रयासरत रहते हैं। बच्चों की प्राथमिक शिक्षा हिंदी माध्यम से ही होती है। राज्य निर्माण के बाद छत्तीसगढ़ी भाषा में प्राथमिक शिक्षा की मांग लगातार उठी है। हिंदी पत्र-पत्रिकाओं, चलचित्रों और गीत-संगीत का छत्तीसगढ़ में व्यापक प्रभाव और बोलबाला है।

छत्तीसगढ़ी साहित्य रचने वाले साहित्यकारों ने न केवल अपनी लोकभाषा साहित्य को समृद्ध किया है, बल्कि हिंदी साहित्य को भी मजबूती प्रदान की है। उनकी रचनाओं में लोकजीवन की सहजता, ग्रामीण संस्कृति की आत्मीयता और सामाजिक यथार्थ का चित्रण मिलता है। अपने सतत प्रयासों से छत्तीसगढ़ी साहित्यकारों ने हिंदी को छत्तीसगढ़ी की तरह केवल भाषा के स्तर पर ही नहीं, बल्कि भावनात्मक और सांस्कृतिक स्तर पर भी समृद्ध किया है। इस समर्पण और योगदान के कारण हिंदी साहित्य में छत्तीसगढ़ी की छाप स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। साथ ही छत्तीसगढ़ी साहित्य में हिंदी साहित्य का वर्चस्व है। छत्तीसगढ़ी साहित्यकारों ने हिंदी को अपनी रचनाओं के माध्यम से लोकजीवन का सजीव चित्रण दिया है, और हिंदी साहित्य को अधिक व्यापक, बहुरंगी और संवेदनशील बनाया है। यही कारण है कि हिंदी और छत्तीसगढ़ी का संबंध सहजीवी है–दोनों एक-दूसरे को समृद्ध करते हैं और भारतीय साहित्यिक परंपरा को और अधिक सशक्त बनाते हैं।

हिंदी कहने पर सबसे पहले खड़ी बोली हिंदी का स्वरूप सामने आता है, जो संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश की दीर्घ परंपरा से परिष्कृत होकर विकसित हुई है। खड़ी बोली हिंदी की उत्पत्ति शौरसेनी अपभ्रंश से हुई और इसका जन्म दिल्ली-मेरठ तथा गंगा-जमुना दोआब के क्षेत्र में हुआ, जहाँ इसे मूल रूप से 'कौरवी' कहा जाता था। प्रारंभिक काल में यह 'हिंदवी' या 'दक्खिनी हिंदी' नाम से प्रचलित रही और लोकजीवन की सहज अभिव्यक्ति का माध्यम बनी। 13वीं-14वीं सदी में अमीर खुसरो ने अपनी कविताओं, पहेलियों और गीतों में इसके प्रारंभिक रूप का प्रयोग किया, इसी कारण उन्हें खड़ी बोली हिंदी का जनक माना जाता है। मुगल काल में दिल्ली राजनीतिक और सांस्कृतिक केंद्र बना, जिसके प्रभाव से खड़ी बोली में फ़ारसी और अरबी शब्दों का समावेश हुआ और यह दरबार तथा आम जनता दोनों में प्रचलित होकर एक सशक्त लोकभाषा के रूप में विकसित हुई। 19वीं सदी में लल्लूजी लाल और सदल मिश्र ने इसे 'खड़ी बोली' नाम दिया, जिसका अर्थ था खरी, शुद्ध और स्थिर। इसी समय भारतेंदु हरिश्चंद्र के युग से गद्य लेखन में इसका प्रयोग बढ़ा और आगे चलकर द्विवेदी युग तथा छायावाद युग में काव्य रचना में भी इसका प्रयोग होने लगा। धीरे-धीरे खड़ी बोली ने ब्रजभाषा पर प्रभुत्व स्थापित कर लिया और हिंदी साहित्य की मुख्यधारा बन गई। आज खड़ी बोली हिंदी का मानक रूप है, जो साहित्य, पत्रकारिता, शिक्षा और प्रशासन की प्रमुख भाषा के रूप में प्रतिष्ठित है और हिंदी के राष्ट्रभाषा स्वरूप में इसकी भूमिका सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। जिस तरह शौरसेनी अपभ्रंश से हिंदी की उत्पत्ति हुई है, उसी प्रकार अर्धमागधी अपभ्रंश से छत्तीसगढ़ी का जन्म हुआ। छत्तीसगढ़ी भाषा अर्धमागधी की दुहिता एवं अवधी की सहोदरा है। छत्तीसगढ़ी पूर्वी हिंदी की श्रेणी में आती है, जिसमें छत्तीसगढ़ी के साथ अवधी और बघेली शामिल है। जिस प्रकार अवधी, बघेली, मैथिली, ब्रज व अन्य लोक साहित्य के बिना हिंदी साहित्य अधूरा माना जाता है, उसी तरह छत्तीसगढ़ी साहित्य का योगदान भी अत्यंत

महत्वपूर्ण है। छत्तीसगढ़ी गद्य साहित्य की प्रारंभिक झलक सन 1702 के आसपास प्राप्त दंतेवाड़ा के शिलालेखों में देखने को मिलती है। पर गद्य साहित्य के उद्भव से पहले ही छत्तीसगढ़ी पद्य साहित्य की उपस्थिति रही होगी, क्योकि गद्य से पहले पद्य साहित्य लिखे जाते थे, साथ ही छत्तीसगढ़ के राजवंशो के दरबारी कवियो के लेखन में भी छत्तीसगढ़ी की झलकी विद्यमान है। लिखित परम्परा के साहित्य के पहले वाचिक परम्परा के साहित्य छत्तीसगढ़ी में आदिकाल से लोकस्वर के रूप में छत्तीसगढ़ में गुंजायमान है। इस आधार पर छत्तीसगढ़ी को भी हिंदी की तरह एक प्राचीन भाषा माना जा सकता है। हिंदी की भाँति छत्तीसगढ़ी भी विविध भाषाओं के सम्मिश्रण से विकसित हुई है। इसमें अवधी, बघेली, ब्रज तथा छत्तीसगढ़ के सीमावर्ती राज्यों की भाषाओं का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। साथ ही हल्बी, गोड़ी, बैगानी जैसी आंचलिक बोलियों के स्वर और शब्द-संरचना ने इसे और अधिक समृद्ध बनाया है। छत्तीसगढ़ी भाषा का यह बहुरंगी स्वरूप इसे न केवल हिंदी परिवार की एक महत्त्वपूर्ण शाखा बनाता है, बल्कि इसे स्वतंत्र साहित्यिक परंपरा का भी आधार प्रदान करता है। गद्य और पद्य दोनों रूपों में इसकी अभिव्यक्ति लोकजीवन, संस्कृति और इतिहास से गहराई से जुड़ी हुई है। यही कारण है कि छत्तीसगढ़ी साहित्य में लोकगीतों, लोककथाओं और शिलालेखों से लेकर आधुनिक कविता, कहानी और नाटक तक की सशक्त परंपरा देखने, पढ़ने, सुनने को मिलती है।

हिंदी साहित्य के इतिहास को डॉ. रामचंद्र शुक्ल ने आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल आदि भागों में विभाजित किया है। इसी विभाजन को आधार मानकर डॉ. नरेंद्र देव वर्मा ने छत्तीसगढ़ी साहित्य का भी काल विभाजन किया, जिसमें क्रमशः आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल को लगभग समान समयावधि में निर्धारित किए गए हैं। डॉ नरेंद्रदेव वर्मा ने छत्तीसगढ़ी साहित्य को आदिकाल या गाथायुग, मध्यकाल या भक्तिकाल तथा आधुनिक काल मे विभाजित किया है। हिंदी साहित्य के प्रत्येक कालखंड का प्रभाव छत्तीसगढ़ और छत्तीसगढ़ी साहित्य पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। यद्यपि छत्तीसगढ़ को प्राचीन समय में दक्षिण कौशल, महाकांतार, चेदिसगढ़ आदि अनेक नामों से जाना जाता रहा, तथापि प्रत्येक युग में छत्तीसगढ़ सांस्कृतिक, सामाजिक, साहित्यिक और अन्य दृष्टियों से निरंतर समृद्ध होता रहा है। छत्तीसगढ़ी साहित्य का इतिहास बहुत पुराना है। आदिकाल ,भक्ति काल और रीतिकाल का प्रभाव छत्तीसगढ़ी साहित्य पर स्पष्ट देखा जा सकता है। इस काल में छत्तीसगढ़ी में भक्ति और रीतिकालीन साहित्य का सृजन निरंतर होता रहा। यद्यपि इन रचनाओं की लिखित परंपरा सीमित रूप से उपलब्ध है, किंतु वाचिक परंपरा में इनका संरक्षण और प्रसार व्यापक रूप से हुआ है। यही कारण है कि आज भी छत्तीसगढ़ में आदिकालीन, रीतिकालीन और भक्तिकालीन साहित्य वाचन परंपरा के माध्यम से सुनने को मिलता है। आदिकालीन साहित्यों में मौखिक परंपरा के रूप में जगनिक कृत आल्हा के साथ पंडवानी, ढोलामारू गाथा, भरथरी, अहिमन रानी

गाथा, केवला रानी गाथा, फुलबासन गाथा आदि का व्यापक प्रचलन रहा, जो आज भी लोकसाहित्य के रूप में गाए और सुने जाते हैं। वीरकाव्य के साथ-साथ प्रेमकाव्य का भी छत्तीसगढ़ में विशेष स्थान था। हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग कहलाने वाला भक्तिकाल छत्तीसगढ़ में भी साहित्यिक उत्कर्ष का युग रहा। इस काल में गाँव-गाँव में भक्तिकालीन साहित्य का पठन-पाठन और वाचन होता था–चाहे वह रामकाव्य हो या कृष्णकाव्य। इसके परिणामस्वरूप छत्तीसगढ़ में रामभक्त, कृष्णभक्त, शिवभक्त और विष्णुभक्त व्यापक रूप से विद्यमान रहे। भक्तिकालीन साहित्य के अंतर्गत निर्गुण भक्ति का भी छत्तीसगढ़ में स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। कबीरदास के शिष्य धनी धर्मदास और उनकी पत्नी आमीन माता ने यहाँ निर्गुण भक्ति की स्थापना की। आगे चलकर संत गुरु घासीदास ने भी भक्तिकालीन काव्य को समृद्ध किया। प्रेममार्गी कवि मुला दाऊद की रचना चंदायान–जिसे लोरकहा या लोरिक-चंदा कहा जाता है–छत्तीसगढ़ की एक प्रमुख लोकविधा रही है। लोरिक-चंदा हो, पंडवानी हो, आल्हा, भरथरी, ढोलामारू या राजा-रानियों की वीर और चाहे विरह गाथाएँ हो–ये सभी प्राचीन साहित्य, अपनी प्रासंगिकता और प्रभाव को आज भी छत्तीसगढ़ी काव्य में जीवित रखते हैं। देव, बिहारी, रहीम, कबीर, सूर, तुलसी, घनानंद, केशव, मीरा बाई, नरोत्तम दास, नन्ददास, रसखान जैसे कवियों की कविताएं छत्तीसगढ़ के लोगो के मुख में भक्ति भाव के गीत के रूप में बसे हैं। छत्तीसगढ़ी अपने व्यापक और शिष्ट साहित्य, व्यवस्थित व्याकरण, लिपि, विविध क्षेत्रों में उपयोगिता तथा बोलने वालों की बड़ी संख्या के कारण अब केवल बोली न रहकर एक सशक्त भाषा का रूप ले चुकी है। यह राजकाज की भाषा के रूप में राजभाषा का दर्जा प्राप्त कर चुकी है और वर्तमान में संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल होने के कगार पर है।

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में भी छत्तीसगढ़ के अनेक कवियों ने उल्लेखनीय योगदान दिया है। इन कवियों ने आधुनिक काल में न केवल छत्तीसगढ़ी साहित्य को समृद्ध किया, बल्कि हिंदी काव्य को भी सुदृढ़ आधार प्रदान किया। भारतेंदु युगीन कवि ठाकुर जगमोहन का जन्म छत्तीसगढ़ में ही हुआ था। इस युग के अन्य कवियों में अनंत राम पांडे, मेदिनी प्रसाद पांडे, वेदनाथ शर्मा, पंडित पुरुषोत्तम प्रसाद पांडे, गोविंद साव और शुकलाल प्रसाद पांडे के नाम प्रमुख हैं। इसी काल में छन्द प्रभाकर और काव्य प्रभार के रचयिता पंडित जगन्नाथ प्रसाद भानु तथा छत्तीसगढ़ी व्याकरण के निर्माता पंडित हीरालाल काव्योपाध्याय का जन्म भी छत्तीसगढ़ में हुआ, जिन्होंने हिंदी और छत्तीसगढ़ी साहित्य को अपने दुर्लभ ग्रंथों से समृद्ध किया। द्विवेदी युग में प्यारेलाल गुप्त, मदनलाल गुप्त, लोचन प्रसाद पांडे और पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी, बलदेव प्रसाद मिश्र जैसे कवियों ने हिंदी साहित्य को नई दिशा दी। पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी ने सरस्वती पत्रिका का संपादन कर हिंदी साहित्य जगत में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। डॉ. रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार छायावाद के प्रवर्तक पंडित

मुकुटधर पांडे हैं, जो छत्तीसगढ़ के ही है। इस युग के अन्य कवियों में लोचन प्रसाद पांडे, बंशीधर पांडे, गजानन माधव मुक्तिबोध, श्रीकांत वर्मा और पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। प्रगतिवादी युग में कोदूराम दलित, द्वारिका प्रसाद तिवारी, प्यारेलाल गुप्त, नरेंद्र देव वर्मा, केयूरभूषण, नारायण लाल परमार, मेहत्तर राम साहू, भगवती सेन और गिरवर दास वैष्णव जैसे कवियों ने हिंदी और छत्तीसगढ़ी साहित्य को नई दृष्टि और ऊर्जा प्रदान की। आज भी छत्तीसगढ़ के कवि हिंदी साहित्य में अपनी रचनाओं के माध्यम से निरंतर योगदान दे रहे हैं। छत्तीसगढ़ के कवियों ने आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल की परंपराओं को निरंतर विभिन्न काव्यों के माध्यम से पुष्ट और समृद्ध किया है।

हिंदी साहित्य की परंपरा के अनुरूप छत्तीसगढ़ी में भी कविता का समृद्ध भंडार विद्यमान है। वहीं छत्तीसगढ़ी लोकभावनाओं को आधार बनाकर हिंदी में अनेक कविताएँ और कहानियाँ लिखी गई हैं। छत्तीसगढ़ी और हिंदी काव्य केवल कविता तक ही सीमित नहीं है, बल्कि कहानी और गद्य की अन्य विधाओं में भी दोनों भाषाएँ समान रूप से पुष्ट होती रही हैं। छत्तीसगढ़ के साहित्यकार निरंतर प्रयासरत हैं कि हिंदी और छत्तीसगढ़ी दोनों को बराबर पोषण मिले। विभिन्न हिंदी पत्र-पत्रिकाओं का छत्तीसगढ़ में व्यापक प्रभाव है। आज भी छत्तीसगढ़ के अधिकांश कवि और लेखक छत्तीसगढ़ी के साथ-साथ हिंदी में भी लगातार सृजन कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं के क्षेत्र में माखनलाल चतुर्वेदी ने बिलासपुर जेल से कई पत्रिकाएँ प्रकाशित कीं। इसी क्रम में माधवराव सप्रे, पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी, ठाकुर प्यारेलाल सिंह और श्याम चरण शुक्ल का विशेष योगदान उल्लेखनीय है। हिंदी की अनेक रचनाओं का छत्तीसगढ़ी में अनुवाद करने का प्रयास भी यहाँ के साहित्यकारों ने किया है। मुंशी प्रेमचंद की कहानियों और कालजयी कृति मेघदूत सहित अन्य कई रचनाओं का छत्तीसगढ़ी अनुवाद उपलब्ध है। रामचन्द्र शुक्ल जी के अनुसार छत्तीसगढ़ के कहानीकार माधव राव सप्रे की कहानी टोकरी भर मिट्टी को हिंदी की प्रथम कहानी का दर्जा प्राप्त है। कहानी, उपन्यास और नाटक जैसी विधाओं में हिंदी और छत्तीसगढ़ी दोनों का विकास यहाँ सतत जारी है। हिंदी गद्य के योगदान में लतीफ घोंघी, निर्मल वर्मा, लोचनप्रसाद पांडेय, विनोद कुमार शुक्ल, वीरेन्द्र सरल, शियाराम शर्मा,नरेंद्र देव वर्मा, हरि ठाकुर, मुकुंद कौशल,कुबेर साहू जैसे कई लेखकों का विशेष योगदान है। छत्तीसगढ़ के मिट्टी में उपजे हिंदी के वरिष्ट लेखक डॉ विनोद कुमार शुक्ल जी को तो भारत के सर्वोच्च ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

आदिकवि वाल्मीकि, जिनके मुख से संसार को प्रथम छन्द प्रस्फुटित हुआ, उनकी पावन धरती छत्तीसगढ़ ही है। छत्तीसगढ पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक महाप्रभु वल्लभाचार्य का जन्मस्थान भी है। महाकवि कालिदास ने रामगढ़ बाकी पहाड़ियों में अपनी उत्कृष्ट कृति मेघदूत की रचना की थी।

छत्तीसगढ़ की कृषि के साथ ऋषि परंपरा छत्तीसगढ़ की विशिष्ट पहचान रही है। इसी कारण छत्तीसगढ़ केवल छन्द, गीत और कविता की भूमि ही नहीं, बल्कि अपनी धार्मिक आस्था और सामाजिक गुणों के लिए भी विख्यात है। छत्तीसगढ़ की यह पावन संस्कृति केवल छत्तीसगढ़ या छत्तीसगढ़ी की पहचान भर नहीं, बल्कि सम्पूर्ण भारत और हिंदी की गौरवपूर्ण धरोहर है। व्याकरण और लिपि की दृष्टि से हिंदी और छत्तीसगढ़ी परस्पर अत्यंत निकट हैं। दोनों भाषाओं में हिंदी के 52 अक्षरों का प्रयोग होता है और देवनागरी तथा ब्राह्मी लिपि इनकी साझा पहचान है, जो इन्हें एक ही भाषाई परिवार में जोड़कर रखती है। यही कारण है कि हिंदी भाषी सहज ही छत्तीसगढ़ी को समझ लेते हैं और छत्तीसगढ़ी भाषी भी हिंदी को बिना कठिनाई ग्रहण कर लेते हैं। यह परस्पर समझ दोनों भाषाओं की समानता और निकटता का सुदृढ़ उदाहरण है। छत्तीसगढ़ में किसी एक भाषा-रूप को स्वीकार कर अन्य भाषा-रूपों को अस्वीकार करने का आग्रह करने वाले लोगों को यह समझ लेना चाहिए कि प्रदेश का सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन न तो छत्तीसगढ़ी के बिना चल सकता है, न हिंदी के बिना। संस्कृत के तत्सम शब्दों का हिंदी की तरह छत्तीसगढ़ी में भी समान रूप से समावेश मिलता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों भाषाएँ न केवल ध्वन्यात्मक और व्याकरणिक स्तर पर जुड़ी हुई हैं, बल्कि शब्द-संपदा के स्तर पर भी एक-दूसरे से गहराई से संबंधित हैं। छत्तीसगढ़ी में प्रयुक्त अनेक शब्द सीधे संस्कृत से आए हैं, जिन्हें हिंदी भी उसी रूप में अपनाती है। कहावतें, मुहावरे और लोकोक्तियाँ दोनों भाषाओं में लगभग समान भाव और संरचना के साथ मिलती हैं। उदाहरण के लिए, जीवन के अनुभवों, सामाजिक व्यवहार और लोकजीवन की सहज अभिव्यक्ति को दर्शाने वाली कहावतें हिंदी और छत्तीसगढ़ी में एक जैसी प्रतीत होती हैं। यह समानता इस बात का प्रमाण है कि दोनों भाषाएँ लोकजीवन की जड़ों से जुड़ी हुई हैं और एक ही सांस्कृतिक चेतना को अभिव्यक्त करती हैं।

निष्कर्ष: हिंदी और छत्तीसगढ़ी का संबंध केवल भाषाई स्तर पर नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक और साहित्यिक धरातल पर भी गहराई से जुड़ा हुआ है। दोनों भाषाएँ एक-दूसरे को पोषित करती हैं और भारतीय साहित्यिक परंपरा को अधिक सशक्त बनाती हैं। हिंदी ने छत्तीसगढ़ी को राष्ट्रीय मंच प्रदान किया, वहीं छत्तीसगढ़ी ने हिंदी को लोकजीवन की आत्मीयता और सांस्कृतिक गहराई का स्पर्श प्रदान किया है। हिंदी साहित्य के आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक हिंदी साहित्य के प्रत्येक चरण का प्रभाव छत्तीसगढ़ी साहित्य पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। छत्तीसगढ़ी साहित्यकारों ने अपनी लोकभाषा की सहजता और आत्मीयता से हिंदी को समृद्ध किया, जबकि हिंदी ने छत्तीसगढ़ी को व्यापकता और स्थायित्व दिया। दोनों भाषाओं की समानता, साझा लिपि और परस्पर समझ उन्हें सहजीवी संबंध में बाँधती है। यही कारण है कि हिंदी और छत्तीसगढ़ी एक-दूसरे के बिना अधूरी प्रतीत होती हैं और भारतीय भाषाई परिवार में विविधता के बीच एकता का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

जिस प्रकार हिंदी साहित्य से अवधी, मैथिली, ब्रज आदि को अलग नहीं किया जा सकता, उसी तरह छत्तीसगढ़ी और उसके कवि-लेखक भी हिंदी साहित्य की धारा का अभिन्न हिस्सा हैं।

**सन्दर्भ सूची:**


- शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, देवनागर प्रकाशन, जयपुर ,2006
- गुप्त, प्यारेलाल, प्राचीन छत्तीसगढ़, पं.रविशंकर शुक्ल विवि, रायपुर,1973
- वर्मा, डॉ. नरेंद्रदेव, छत्तीसगढ़ी भाषा का उद्विकास, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, 1980
- तिवारी, डॉ.भोलानाथ, भाषा विज्ञान, किताब महल, इलाहाबाद,1969
- तिवारी, नन्दकिशोर, छत्तीसगढ़ी साहित्य की दशा और दिशा, वैबुव प्रकाशन, रायपुर,1969
- मिश्र, डॉ. बलदेव प्रसाद, छत्तीसगढ़-परिचय, हिंद प्रकाशन, बिलासपुर, 1950.
- वर्मा, विनोद कुमार, विमर्श के निकष पर छत्तीसगढ़ी, वदन्या प्रकाशन बिलासपुर
- वर्मा, विनोदकुमार, हिंदी का सम्पूर्ण व्याकरण,वदन्या पब्लिकेशन बिलासपुर, 2021
- वर्मा, विनोद कुमार, छत्तीसगढ़ी का सम्पूर्ण व्याकरण, तृतीय संस्करण, वदन्या पब्लिकेशन, बिलासपुर, 2024
- कर, डॉ. चित्तरंजन (संपादन), छत्तीसगढ़ी दानलीला : एक समीक्षा, राजिम, 1982.
- वर्मा, डॉ. विनोद कुमार, छत्तीसगढ़ी का मानकीकरण,राजभाषा आयोग,2022
- साव, डॉ. बल्देव प्रसाद, छत्तीसगढ़ी काव्य के महत्वपूर्ण कवि
- शर्मा, डॉ. सुधीर,आठवी अनुसूची में छत्तीसगढ़ी, छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग, 2015
- यदु,मन्नुलाल, छत्तीसगढ़ की अस्मिता, रायपुर, छत्तीसगढ़ अस्मिता प्रतिष्ठान
- वर्मा, देवी प्रसाद, छत्तीसगढ़ के साहित्यकार, रायपुर, शताक्षी प्रकाशन